

प्रश्न-पेपर 49

ता. 16/11/83

मंदिरान्त-प्र. पाठ 13 थी 18

100 मार्क्स

प्र. 1 नीचेना प्रश्नोंना जवाब आपो। 15 मार्क्स

- (1) परीक्षभूत ब्यारे वपराय ते सदष्टांत जणावी शकारांत अनिट् धालु जणावी
ते तथा व्ये ना अंग जणावी।
- (2) परीक्षामां आविकारी प्रत्यय पर छतां पण गुण थता होय तेवा धालुओनो २ पु. जणावी।
- (3) अ नो ए ब्यारे थाय छे ते सदष्टांत छटाडी तेमज बीजा कोई धालुओमां थतो
होय तेवा धालुओनो १ पु. जणावी।
- (4) संप्रसारण एट्ले शुं ? संप्रसारण ले तेवा स्वरंत धालु तेमज स्वप्, व्यथ् अने
ग्रह् धालुनो त्रीजो पु. ए. व. जणावी।
- (5) क्रियातिपत्यर्थ ब्यारे वपराय ते सदष्टांत जणावी सामान्य भवि. मां अनिट् छतां
इ ले तेवा तेमज पीतना पदमां फेरफार करे तेवा धालु जणावी।

प्र. 2 नीचेना मांग्या प्रमाणे रूप लखो। (परीक्ष) 5 मार्क्स

- (अ) (1) स्निह् - २ पु. ए. व. (2) मस्ज - १ पु. ए. व.
(3) म्ले - २ पु. (4) जृ - 3 पु. (5) मस्ज - २ पु. ए. व.
- (ब) श्वस्तन, सामा. भवि. अने क्रियाति. ना रूप लखो। 5 मार्क्स
- (1) हृ - १ पु. द्वि. व. (2) कन्ध - २ पु. ए. व. (3) वृथ - २ पु. व. व.
(4) आधि + इ - २ पु. व. व. (5) रूप - २ पु. ए. व.

प्र. 3 नीचेनानी साधनिका सुस्पष्ट करो। 5 मार्क्स

- (अ) (1) हुह् - २ पु. ए. व. (2) गाह् - २ पु. व. व. (3) सृज - २ पु. १ व.
(4) हन् - १ पु. द्वि. व. नी परीक्ष साधनिका करो।
- (ब) नीचेनानी मांग्या प्रमाणे साधनिका सुस्पष्ट करो। 5 मार्क्स
- (1) कृष - १ पु. एक व. श्वस. (2) गुह् - २ पु. १ व. सामान्य
(3) स्पृश - आत्म. २ पु. व. व. क्रियाति.

प्र. 4 नीचेना प्रश्नोंना जवाब आपो। 15 मार्क्स

- (1) धालुओमांथी वगर प्रत्यये थयेला नामोमां ब्यारे अने शुं फेरफार थाय छे ते जणावी
वर्षाभ् तृतीया एक व. आपो।
- (2) प्राच् आदि शब्दोमां विभक्तिना प्रत्ययों लागतां शुं फेरफार थाय छे ते जणावी।
- (3) अन अन्ते होय तेवा नामथी जुदा पड़ता नाममां ब्यारे अने शुं फेरफार थाय छे
ते जणावी।
- (4) आधिकतादर्शक अने श्लेषतादर्शकना प्रत्यय आपी ते ब् वच्चेनो तफावत जणावी।
- (5) अव्यय सिवाय ल्ये अन्ते स्वर-व्यंजनमां शुं फेरफार थाय छे !

प्र. 5 (अ) मांग्या प्रमाणे रूपो आपो।

15 मार्क्स

- (1) क्रोडु - लृ. चतुः, पंचमी एक व. (2) पुंस - द्वितीया विभक्ति
(3) जिह्रियत - स्त्री. तृतीया वि. (4) भ्रातृ - पु. 2-3-6 द्वि. व.
(5) द्रुह् - प-6-7 व. व. (6) तिर्यच - स्त्री. चतुर्थी विभ.
(7) स्त्री - द्वितीया वि. (8) अर्वन् - पंचमी विभ.

(ख) नीचेना मांग्या प्रमाणे संस्कृतमां शब्दो लखो।

3 मार्क्स

- (1) 42-96 संख्यावाचक (2) 63-33 संख्यापूरक (3) 86-78 आवाही दर्शक

प्र. 6 (अ) मांग्या प्रमाणे रूपो आपो।

12 मार्क्स

- (1) 'एक' लुं संख्यापूरक स्त्री. द्वि. वि. (2) चतुर् लुं संख्यापूरक पु. चतुर्थी वि.
(3) त्रि " " " लृ. वि. (4) अढठन् संख्यावाचक पु. 2-5-7 व. व.
(ख) मूल नाम साथे आधिकतादर्शक अने श्रेष्ठतादर्शक आपो।

7 मार्क्स

- (1) पहोलु (2) साडु (3) जुवान (4) जाडु (5) लांकु
(6) भृश (7) परिवृढ (8) सिध (9) यशस्वत् (10) धीमत्

प्र. 7 (अ) नीचेना वाक्यनु संस्कृत करो।

8 मार्क्स

- (1) महावीर परमात्मानो वीरतानां इन्द्रे पोतानी समामां वरवाण कर्या अने देवोए पोतानां मस्तक डोलाव्या अने तेथी देवे परमात्मानो परीक्षा करी।
(2) त्रौ लौकमां प्रशंसनीय एवा ऽन्व धनुषनी कायावाला आदीश्वर भगवान् पूर्व नन्वाणुवार रायणना झाड नीचे आव्या।
(3) संस्कृतने भगतां एवा आपणे आगल अभ्यास करी शास्त्रनु वांचन करीशुं अने वांचन करतां करतां चिंतन करी आठ कर्मरूपी मलने दूर करी निर्मल सिद्धि स्थानने पामेला सिद्धोनी साथे स्वसुरवनी अनुभव करतां अनंतकाल पसार करीशुं।
(4) हे मित्र! में प्रथम ज तारी साथे दीक्षा लेवने प्रार्थना करी छे।

(ख) नीचेना संस्कृत वाक्यनु गुजराती करो।

5 मार्क्स

- (1) दशमिरेदशैश्चतुर्दशाऽपि विद्यास्थानानि सह सर्वाभिरूप विद्याभिर्विद्विञ्चकार कला शास्त्रञ्च निरवशेषं विवेद सकुमार।
(2) रत्नैर् महाव्यैस्तुतुषु न देवाः न भोजिरे भीमघ्नेण भीतिम्।
सुधां विना न प्रययु विरामं न निश्चेतार्थाय विरमान्ति धीराः
(3) ये आत्मानः कर्मप्रति धृष्णवन्तः जीवन्ति ते आत्मानो जगति विरलाः ईक्ष्यन्ते।